हम सब कटुए हैं

अंशु मालवीय

हम सब कटुए हैं
आमात्य!
अपने कटे हुए सर
कटी हुई बाहें
कटे हुए पैर
और क्षत विक्षत आत्माएं लेकर
हम भटक रहें हैं
हम कातर कबंध .....
हम सब कटुए हैं
राजन!
हम उस मां के कटे हुए सर हैं
जिसे पातकी पितृत्व की
मदिरा से चूर
पाखंडी परशु ने
धड़ से अलग कर दिया था
हम अधूरे धड़ से
मां के कटे हुए शीश के कल्ले
माटी में बोते हैं .....
हम सब कटुए हैं
राजपुरूष!
हम उस तापस कुमार के भूलुंठित शीश हैं
जिसे खोखली मर्यादा की म्यान से निकाली गई
और जाति दर्प से विष बुझाई तलवार ने
काट दिया था.....
जिसे किसी ने नहीं सुना
और जो अट्टहास गूंजता है हमारी संस्कृति कंदराओं में
हम उस कटे हुए शीश के अट्टहास हैं.....
हम सब कटुए हैं
राजदंडाधिकारियो!
हम युगों युगों से
उस युवती की रक्त स्रावित नाक हैं
जिसे पुरुष के अहम ने
जिसे राज पुरुष दंभ ने काट दिया था
हमारी नककटी सभ्यता उस युवती के रक्त में
स्नान कर रही है और डुबकी मार
अपना ईश्वर खोज रही है
हम सब कटुए हैं
चक्रवर्ती !
हम उस योद्धा का कटा हुआ अंगूठा हैं
जिसे एक कपटी गुरुता ने काट लिया था
और फिर लगातार कटते रहे अंगूठे
कटते रहे सर
कटती रहीं बांहे
कटती रही उंगलियां
देखो आक्षितिज बिखरे हैं कटे हुए अंगूठे
देखो उन कटे हुए अंगूठों के निशान ले रही है मंत्रिपरिषद
देखो उन कटे हुए अंगूठों की माला पहन रहे हैं महामात्य
हम सब कटुए हैं
अभिजात्यो !
हम सब कटुए हैं और बहुमत में हैं
हम खड़े हैं
इतिहास के राजपथों पर
अपनी कटी हुई पहचान हथेलियों पर सजाए
आप इस देश को छोड़ें सम्राट
अपने नवनीत वदन और संपूर्ण कलेवर के साथ
ये देश हमारा है
ये आर्यावर्त कटुओं का है

विशेष / अमेरिका में ज्वाला देवी

श्याम सिंह रावत

अमेरिका में 100 साल पहले एक ऐसी जगह का पता चला, जहां साल भर बहते रहने वाले एक झरने के नीचे छोटी-सी गुफानुमा जगह पर, एक जलती हुई लौ मिली। थोड़ा अंदर की ओर होने से इस पर पानी के छींटे नहीं पड़ते, तो यह अनवरत जलती रहती है।

न्यूयॉर्क में चेस्टनट रिज काउंटी पार्क की पथरीली चट्टानों के बीच बनी इस प्राकृतिक गुफानुमा जगह का नाम ठीक उसी तरह 'इटरनल फ्लेम फॉल्स' रख दिया गया, जैसे हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में कालीधर पहाड़ी पर मौजूद इसी तरह की छोटी-सी जगह पर हमेशा जलती रहने वाली लौ को लोगों ने 'ज्वाला देवी' कहना शुरू कर दिया।

इन दोनों जगहों पर पहाड़ के भीतर बनी गुफानुमा जगह पर हमेशा आग की एक लौ जलती रहती है।

इन दोनों में बहुत बड़ा फर्क है कि भारत में एक शातिर समुदाय ने इस लौ को ज्वालादेवी

नाम देकर विवेकहीन समाज का भावनात्मक शोषण कर अपना उल्लू सीधा करने के लिए अंधभक्ति में और भी अधिक गहरे डुबोने का साधन बना लिया, ताकि पीढ़ी-दर-पीढ़ी वे इसका फायदा उठा सकें.

उधर, अमेरिका वालों ने इस सदैव जलती रहती लौ का कारण खोज निकाला!

इस आग के बारे में इंडियाना यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने शोध कर बताया कि वहां धरती के अंदर मौजूद मीथेन गैस, लगातार बाहर निकल रही है. उसी में किसी ने आग लगा दी तो ज्वाला जलती चल रही है.

इस तरह दुनिया के विभिन्न स्थानों पर धरती के अंदर प्राकृतिक गैस की मौजूदगी के कारण दिखाई देने वाली लपटें आम हैं!

मूर्खों को उनके स्वर्ग (Fool's Paradise) में आनंद आता है तो उन्हें वहां से बाहर नहीं निकाला जा सकता.

हजारों साल का इतिहास साक्षी है कि वे सदैव बुद्धि-विवेक के शत्रु होते हैं.

इसीलिए सुकरात को जहर दे दिया, ईसा मसीह को सूली पर लटका दिया, ब्रूनो को चौराहे पर जिंदा जला दिया, गैलीलियो को अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया, शम्स तबरेज की खाल उतार दी...डार्विन को स्कूली बच्चों के पाठ्यक्रम से बाहर निकाल दिया!

बुद्धि की गरीबी से बड़ा कोई अभिशाप नहीं है और धूर्तता नामक बीमारी का कोई इलाज नहीं है. और, यह भी अटल सत्य है कि "जब तक ये दोनों रहेंगे, तब तक धर्म के नाम पर धंधा चलता रहेगा!

लघु कहानी / बाबा और फ़क़ीर

(यह कहानी फ्रांसीसी प्रबोधन काल के महान दार्शनिक वोल्तेयर ने 1750 में लिखी थी! यह समय था जब पुर्तगाली, अंग्रेज़, डच और फ्रांसीसी कम्पनियां भारत पर अपने उपनिवेशवादी प्रभुत्व के लिए संघर्ष कर रही थीं! उस समय पूरे यूरोप में भारत के साधुओं, तांत्रिकों, अवधूतों, कापालिकों, योगियों, संपेरों आदि के बारे में, योग-ध्यान और अघोरी क्रियाओं, योनि और लिंग की पूजा, शमशान-साधना आदि के बारे में रहस्य-रोमांच भरी कहानियां खूब चलन में थीं। वोल्तेयर, दिदेरो, रूसो, मौन्तेस्क्यू आदि प्रबोधनकालीन दार्शनिक इस चलन के खिलाफ़ थे, क्योंकि वे वैज्ञानिक टेम्पर, तर्कणा और जीवन के प्रति भौतिकवादी नज़रिए के पक्षधर थे। इसीलिए, जब फ्रांसीसी कुलीनों और बौद्धिकों के बीच भारत के साधुओं-तांत्रिकों-कापालिकों-अघोरियों आदि-आदि की कहानियों के ज़रिये भाववादी-रहस्यवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जा रहा था तो प्रबोधनकालीन दार्शनिकों ने इसके ख़िलाफ़ मोर्चा लिया।)

मैं गंगा के किनारे बनारस शहर में था जो ब्राह्मणों की पुरातन भूमि थी। मैंने जमकर अध्ययन किया। मैं हिन्दी अच्छी तरह से समझने लगा था। मैंने ढेर सारी बातें सुनीं और हर चीज़ दर्ज़ कर ली। मैं अपने दोस्त ओम के साथ रुका हुआ था।

वह एक ब्राह्मण था, और जितने लोगों को मैं अब तक जानता था, उनमें सबसे अधिक योग्य था।

एक दिन हम एक साथ एक मंदिर में गए। वहां हमने कई सिद्ध संतों को देखा। जैसा कि सर्वविदित है, उन्होंने संस्कृत नामक भाषा का अध्ययन कर रखा था जिसमें एक पवित्र पुस्तक लिखी गयी थी जिसे वे वेद कहते थे।

मैं एक सिद्ध पुरुष के सामने से गुज़रा जो उसी पवित्र पुस्तक का अध्ययन कर रहा था।

वह चीखा, ओ नीच अधम नास्तिक! तुम्हारे कारण मैं उन स्वरों की संख्या भूल गया जो मैं गिन रहा था। तुम्हारे कारण अब मरने के बाद मेरी आत्मा एक खरगोश के शरीर में जायेगी जबकि मुझे पूरी आशा थी कि यह एक तोते के शरीर में जायेगी।

उसे शांत करने के लिए मैंने उसे एक रुपया दिया।

वहां से कुछ ही कदम आगे बढ़ते दुर्भाग्यवश मुझे छींक आ गयी जिससे एक योगी जाग गया जो समाधि की अवस्था में था।

मैं कहां हूं, वह चीखा,कैसी विपदा है! मैं अपनी नाक की नोक नहीं देख पा रहा हूं! दिव्य ज्योति विलुप्त हो गयी है!

अगर मेरे कारण ऐसा हुआ है कि आप अपनी नाक की नोक नहीं देख पा रहे हैं तो इस नुकसान की भरपाई के लिए यह लीजिये एक रुपया! अब आप अपनी दिव्य ज्योति के पास वापस चले जाइए, मैंने योगी महाराज से कहा।

मेरा मित्र ओम फिर मुझे सबसे प्रसिद्ध सिद्ध पुरुष की गुफा में ले गया जिसे लोग बाबा कहते थे। वह बन्दर की तरह अलफ़ नंगा था और उसके गले के इर्द-गिर्द एक ज़ंजीर लिपटी हुई थी जिसका वज़न कम से कम साठ पौण्ड था।

वह एक कुर्सी पर बैठा हुआ था जो कीलों से भरी हुई थी और कीलें उसके चूतड़ों में धँसी हुई थीं ! बहुत सारी स्त्रियाँ आकर उससे परामर्श ले रही थीं ।उसकी बात हर परिवार के लिए भविष्यवाणी थी और उसका सम्मान बहुत अधिक था।

ओम की उससे बहुत लम्बी बातचीत हुई।

ओम ने पूछा, स्वामीजी, क्या आपको विश्वास है कि सात जीवनों और आत्मा के सात कायान्तरणों के बाद मैं ब्रह्मलोक निवास का अधिकारी हो जाऊँगा?

यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम कैसा जीवन बिताते हो!--बाबा ने कहा।

मैं एक अच्छा नागरिक, एक अच्छा पति, एक अच्छा पिता और एक अच्छा मित्र होने के लिए सतत प्रयास करता हूँ । मैं गरीबों को रुपये-पैसे से मदद करता हूँ और पड़ोसियों के साथ शान्ति-सौहार्द्र बनाए रखता हूँ ।- ओम ने कहा!

बाबा ने पूछा,क्या तुम कभी-कभी अपने चूतड़ों में कीलें धँसाते हो ?

नहीं स्वामीजी, कभी नहीं, ओम ने उत्तर दिया।

मुझे खेद है ! तब तुम कभी भी ब्रह्मलोक तक नहीं पहुँच सकते ! -बाबा ने कहा !

-साइबर नजर